अध्याय–20

रायपुरवाले चाचा की शादी

कल की कक्षा के लिए सुखदा अपनी किताब–कॉपियाँ सहेज रही थी।

अमन दौड़ता हुआ कमरे में आया और बोला, ''दीदी–दीदी! जल्दी चलो। आँगन में दादाजी शादी में जाने की बातें कर रहे हैं।''

सुखदा के परिवार के सदस्य आँगन में बैठकर बातें कर रहे थे। अमन और सुखदा भी ध्यान से उनकी बातें सुनने लगे।

7HP69V

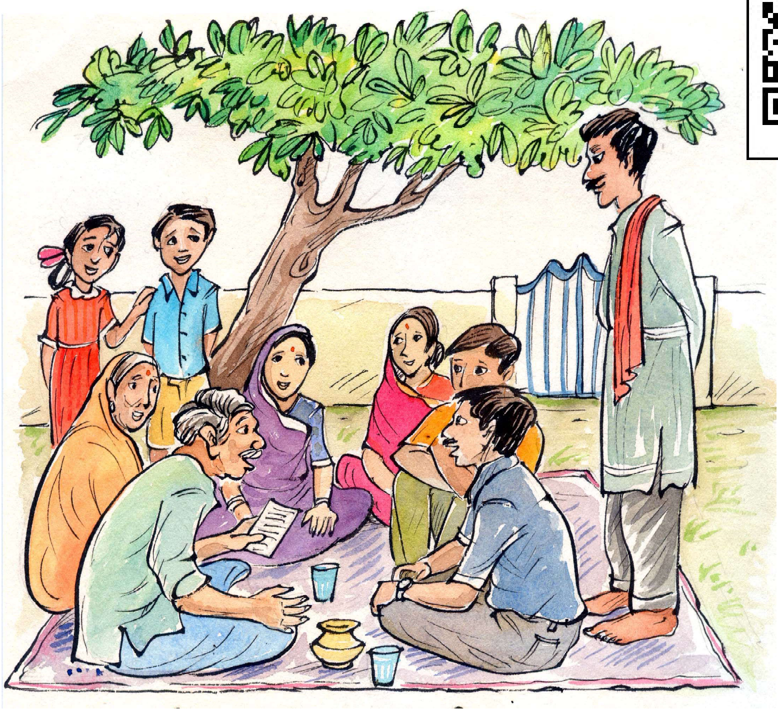

दादाजी – ''बड़े भैया का पत्र आया है। हम सभी को इसी महीने रवि की शादी में रायपुर जाना है। बच्चों के स्कूल में भी गर्मी की छुट्टियाँ होनेवाली हैं। लौटने में करीब दस दिन लग जाएँगे। हम सभी को जाने की तैयारी में जुट जाना चाहिए।''

क्या आप विद्यालय द्वारा/या अपने परिवार के साथ अन्य शहर गए हैं? अपने अनुभवों को लिखिए।

– भ्रमण किए गए स्थान का नाम : ————————————————————————
– साथ गए परिवार के सदस्यों/दोस्तों के नामः ——————————————————
– यात्रा का साधन (बस/ट्रेन) : ————————————————————————
– तुमने क्या–क्या देखा : ————————————————————————
– तुम्हें सबसे अच्छा क्या लगा : ————————————————————————

सुखदा के पिताजी– ''मैं कल कार्यालय से लौटता हुआ पटना से रायपुर की आरक्षित टिकटें लेता आऊँगा। गाँव से पटना तक हम बस से जाएँगे।'' दादाजी ने आगे बताया – ''दोनों बहुएँ शादी में दिए जानेवाले कपड़े और उपहारों की तैयारी कर लेंगी। सर्वजीत तुम गाय–बछड़ों के चारे और घर के अन्य कार्यों की तैयारी के बारे में रामदीन को समझा देना। सुखदा और अमन, तुम दोनों दादी और माँ को सामान रखने – सहेजने में मदद करना।'' इस प्रकार दादाजी ने सबके काम बाँट दिए।

रायपुर जाने की तैयारी में परिवार के सदस्यों की कौन–कौन सी जिम्मेदारियाँ हैं –

दादाजी	————————————	दादीजी	————————————
सुखदा के पिताजी	————————————	माँ	————————————
सुखदा के काकाजी	————————————	चाची	————————————
रामदीन चाचा	————————————	अमन–सुखदा	————————————

अमन ने दादाजी से पूछा– ''बड़े दादाजी इतनी दूर रायपुर में क्यों रहते हैं?''

दादाजी– ''हाँ बेटे, तुमने सही सवाल पूछा है।'' दादाजी ने अमन और सुखदा को अपने पास बैठाया, और उन्हें अपने बचपन की बातें बताने लगे।

सुखदा और अमन दादाजी के बिस्तर पर बैठकर परिवार की कहानी बड़े चाव से सुनने लगे।

दादाजी ने बताया– ''जब मैं छोटा था तब यहीं गाँव में बड़े भैया, दीदी और माँ–पिताजी हम सब साथ–साथ रहते थे। हम भाई–बहन साथ खेलते और पढ़ते थे।''

दादाजी– ''मैं और भैया, यानी तुम्हारे रायपुरवाले बड़े दादाजी, खेती–बाड़ी के कार्यों में भी अपने पिताजी का हाथ बँटाते थे। कुछ दिनों बाद बड़े भैया को रायपुर में नौकरी लगने की चिट्ठी आई। जानती हो सुखदा! तुम्हारे परदादाजी चाहते थे कि हम दोनों भाई गाँव में ही रहकर खेती–बाड़ी में उनकी मदद करें। परन्तु उन्होंने बहुत सोच–विचारकर बड़े भैया को नौकरी के लिए रायपुर जाने की अनुमति दे दी।''

पिताजी या दादाजी पटना जाते हैं तो उनके थैले में कौन–कौनसी सामग्रियाँ रहती होगी। सूची बनाइए...

(1) ____________________

(2) ____________________

(3) ____________________

(4) ____________________

(5) ____________________

(6) ____________________

''और आप दादाजी?'' अमन ने पूछा। दादाजी ने हँसते हुए कहा– ''मैं तो तुम्हारे जैसा छोटा था और पढ़ाई कर रहा था। भैया रायपुर नौकरी करने चले गए। मैं यहीं पढ़ाई–लिखाई कर खेती–बाड़ी में पिताजी का हाथ बँटाने लगा।''

कुछ दिनों बाद भैया और दीदी की शादी इसी गाँव में हुई। शादी के बाद भैया भाभी के साथ रायपुर चले गए और मेरी दीदी अपने ससुराल। बरौनीवाली बुआ को तुम जानते ही हो।

सोचकर लिखिए–

दादाजी गाँव में ही क्यों रह गए?

____

____

दादाजी के भैया को गाँव क्यों छोड़ना पड़ा?

____

———————————————————————————————————

———————————————————————————————————

परदादाजी क्या चाहते थे?

———————————————————————————————————

———————————————————————————————————

सवेरे सभी लोग रायपुर के लिए रवाना हुए। अमन और सुखदा, दादाजी के साथ सामानों की गिनती कर ध्यान से रख रहे थे। सबसे पहले बस से वे लोग पटना रेलवे–स्टेशन पहुँचे। समय पर गाड़ी आई। सभी अपनी गाड़ी के डिब्बे में अपनी–अपनी आरक्षित सीटों पर बैठ गए। सुखदा की माँ और चाची ने रात का खाना निकाला और सभी खाना खाकर सो गए।

सुबह रायपुर स्टेशन पर रवि चाचा लेने आए। उन्होंने सुखदा के दादा–दादी और सभी बड़ों को पाँव छूकर प्रणाम किया।

रवि चाचा– ''अरे, सुखदा और अमन, आओ मेरे पास!''

सब जीप से बड़े दादाजी के घर की ओर चल दिए।

रवि चाचा– देखो अमन, बड़े दादाजी का घर आ गया। तभी गाड़ी एक सुंदर सजे घर के सामने रुक गई।

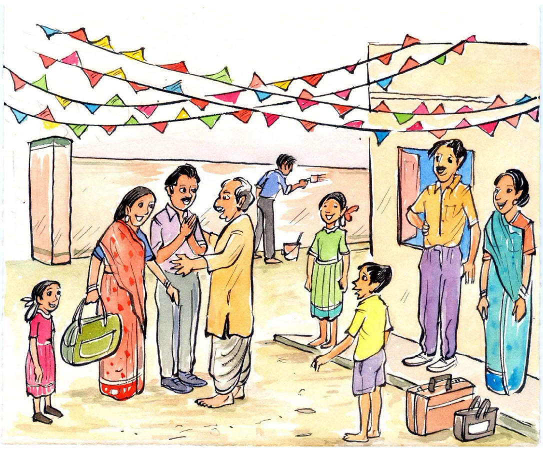

बड़े दादाजी, दादीजी, उनकी बहू हमारे स्वागत के लिए बाहर ही खड़े थे। दादाजी ने बड़े दादा–दादी के पाँव छूए। पिताजी–चाचा, माँ–चाची ने भी उनको पाँव छूकर प्रणाम किया। बच्चों ने सभी बड़ों को प्रणाम किया।

बड़ी दादी की आँखों में खुशी के आँसू छलक आए।

बताइए–

सुखदा के परिवार ने रायपुर यात्रा के लिए किन–किन साधनों का उपयोग किया?

____

____

बड़े दादाजी के घर को सुखदा ने कैसे पहचाना?

____

सुखदा के परिवार से मिलने के लिए बड़े दादाजी के घर के कौन–कौन लोग खड़े थे?

____

____

बड़ी दादी की आँखों में आँसू क्यों आ गए?

____

____

सुखदा ने देखा– रायपुरवाली चाची ने सलवार–फ्रॉक पहनी थीं। जबकि उसकी माँ ने साड़ी पहन रखी थी।

रवि चाचा सामान को सँभालकर अन्दर रख रहे थे।

शाम तक तो बड़े दादाजी का घर मेहमानों से भर गया। बरौनीवाली बुआ, फुफाजी और उनकी बेटी गुड़िया भी आई। अरे सुखदा– तुम कब आई, चलो अब तो बड़ा मजा

आएगा। अमन का हाथ पकड़ वे दोनों तेजी से बाहर दौड़ गई।

''चलो हम लोग रवि चाचा से बातें करें''– सुखदा ने कहा।

तीनों बच्चे रवि चाचा के पास आए। सुखदा ने कहा– ''रवि चाचा, आप हमें होनेवाली चाची की तस्वीर दिखाइए ना।'' गुड़िया ने पूछा– ''आपने चाची को देखा है? कैसी हैं वो।''

रवि चाचा ''अरे–अरे एक बार में इतने सवाल। बच्चो, तुम जानते हो, मैं और तुम्हारी होनेवाली चाची एक साथ ही काम करते हैं। भोपाल में हमने साथ–साथ पढ़ाई भी की है। दीदी के पास उनकी तस्वीर भी है। तुम उनसे लेकर देख सकते हो।''

बच्चे बुआजी के पास दौड़कर पहुँच गए। बुआजी, माँ और चाची को तस्वीर दिखा रही थीं। बच्चे ने भी चाची का फोटो देखा।

अरे कितनी सुंदर हैं हमारी होनेवाली चाची! सुखदा ने कहा।

बड़ी दादी बता रही थीं कि चाची का नाम सुरोचिता है। वे बंगाली परिवार की हैं। बड़े दादाजी ने बताया कि इनका परिवार वर्षों पूर्व पश्चिम बंगाल से आकर रायपुर में बस गया था।

''तब तो बढ़िया है, चाची से हम बंगला भी सीख लेंगे''– सुखदा ने कहा।

सुबह–सुबह आँगन में रवि चाचा को उबटन लगाया जा रहा था। घर की औरतें मंगल गीत गा रही थीं।

शाम को बारात जाने की तैयारियाँ हो रही थीं। बड़े दादाजी आँगन में आकर बोले– ''शाम छह बजे बारात निकलेगी। घर की औरतें भी बारात में जाएँगी। सभी लोग समय पर तैयार हो जाएँ।''

सुखदा सोच रही थी – अपने गाँव की बारात में तो औरतें नहीं जाती हैं, ऐसा क्यों? चाचा ने बताया हर जगह के प्रचलन अलग–अलग होते हैं।

बारात कन्या–पक्ष के यहाँ पहुँच गई। कन्या पक्ष के लोगों ने फूलों की माला पहनाकर बारातियों का स्वागत किया। सभी को एक सुंदर सजावटवाले पंडाल में बैठाया। बड़े दादाजी और दादाजी धोती–कुरता और पगड़ी में बड़े जँच रहे थे। धोती–कुरता में सजे रवि चाचा अपने दोस्तों के साथ पंडाल में आए। सुखदा, गुड़िया और अमन घूम–घूमकर सजावट देखने लगे।

सुखदा ने कहा – ''अरे गुड़िया! देखो यह शादी का मंडप थर्मोकॉल से बना हुआ है, पर ये बड़ा ही सुन्दर है। हमारे गाँव में तो मंडप कच्चे बाँस, केले के पेड़ और रंग–बिरंगे कागजों से सजाते हैं।''

बताइए–

सुखदा को शादी के मंडप की सजावट में अपने गाँव की तुलना में क्या–क्या अंतर दिखा?

———————————————————————————————————

———————————————————————————————————

एकाएक हलचल बढ़ गई। होनेवाली चाची को पीढ़े समेत उठाकर दो–चार लड़के मंडप की ओर बढ़े आ रहे थे।

चाची बड़ी सुन्दर लग रही थीं। घर की महिलाएँ विशेष ध्वनि के साथ शंख बजा रही थीं। बाद में सुखदा की माँ ने बताया कि बंगाल में शुभ कार्यों के समय 'उलू–उलू' ध्वनि तथा शंख ध्वनि करने की प्रथा है।

''मुझे तो भूख लग रही है दीदी''– अमन ने धीरे से कहा।

सुखदा– ''थोड़ी देर ठहर जाओ अमन, सब एक साथ खाएँगे।''

तभी एक महिला बच्चों को खाने के टेबल पर ले गई।

'थैंक यू आंटी' सुखदा ने विनम्रता से कहा।

गपशप, खाना–पीना और खेलकूद में आधी रात हो गई। अमन और सुखदा की आँखें नींद से भारी हो रही थीं। जल्द ही सभी बच्चे और दादी घर लौट आए और सो गए।

सुबह रवि चाचा और चाची एक सुन्दर सी गाड़ी में आए।

सुखदा के पिताजी ने बताया कि फोटोग्राफर आएगा और अपने परिवार के सभी सदस्यों का समूह फोटो लिया जाएगा।

मकान के सामनेवाली खाली जगह पर पहले एक दरी बिछायी गई और फिर कुछ कुर्सियाँ लगाई गईं। फिर परिवार के सभी सदस्यों का एक समूह फोटो लिया गया।

सुखदा सोच रही थी– दादाजी और बड़े दादाजी के परिवार के सभी सदस्य एक साथ ऐसे पारिवारिक आयोजनों पर ही मिल पाते होंगे। इस फोटो की एक प्रति मैं भी अपने पास रखूँगी।

रायपुर में सुखदा ने शादी में क्या–क्या देखा? अपने शब्दों में लिखिए–

____

____

____

____

____

परियोजना कार्य

आप अपने परिवार का वंश–वृक्ष चित्रों के साथ बना सकते हैं या आप उनके फोटो भी काटकर लगा सकते हैं। उनके फोटो के नीचे उनका नाम व आपके साथ उनका क्या रिश्ता है लिखिए।

खेल–खेल में

रंग बदलती हल्दी

सामग्री–

1. सफेद सूती कपड़ा (लॉग क्लॉथ) थोड़ा सा या सोखता कागज या फिल्टर पेपर।
2. चाय का कप (2)
3. एक छोटा चम्मच
4. थोड़ी सी रूई
5. एक बॉल पेन जिसका रिफिल व पीछे का पेंच निकला हुआ हो।
6. हल्दी
7. सोडा (खाने का या कपड़े धोने का)
8. एक कप पानी

विधि :

1. सफेद कपड़ा या कागज का एक आयताकार टुकड़ा (लगभग पाँच इंच × सात इंच) काट लीजिए।
2. दो चम्मच हल्दी आधा कप पानी में घोल लीजिए।
3. कपड़े या कागज पर यह घोल धीरे–धीरे पूरे सतह पर डालकर अच्छे से लगा लीजिए और कपड़े या कागज़ को सूखा लीजिए।
4. आधा कप पानी में सोडा मिलाकर घोल तैयार कर लीजिए।
5. एक खाली बॉल पेन में एक रूई के टुकड़े का गोला बनाकर चित्र अनुसार डाल दीजिए। अब इस बॉल पेन में सोड़ा का घोल डालिए और रूई को भिंगोइए।

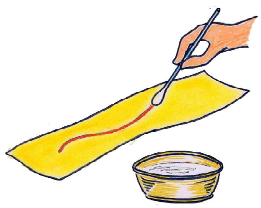

अब अपने हल्दी कपड़ा या कागज पर इस पेन से लकीर खींचकर देखिए। आपने क्या देखा, मजा आया!